एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

फार्म प्रबंधन

(*दिनेश कुमार)
परियोजना सहयोग, भाकृअनुप, केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर
* dineshskrau@gmail.com

साधनों का मूल्यांकन

कोई प्रक्षेत्र योजना विभिन्न उत्पत्ति के साधनों जैसे भूमि, श्रम, पूंजी एवं संगठन की कार्यकुशलता और उपलब्धि के आधार पर बनाई जाती है। योजना की आवश्यकता तकनीक यह होना चाहिए। जिसमें वे सब तरीके एवं कार्य सम्मिलत किये जाएँ। जिसमें कि प्रति एकड़ उत्पादन में वृद्धि हो सके । इसलिये प्रक्षेत्र योजना बनाने का पहला कदम यह होना चाहिए कि प्रक्षेत्र के अलग अलग प्लाट की भूमि की किस्म के बारे में सम्पूर्ण जानकारी को नोट किया जावे, सिंचाई के लिये उपलब्ध पानी की मात्रा पानी निकास, भूमि का क्षरण का वेग, भूमि के टुकड़ों की संख्या व उनका आकार, सडके मेड़, फसल क्षेत्रफल, चारागाह भूमि और फार्म स्टेड की स्थिति आदि की विस्तृत जानकारी लेना । अगर किसान भाईयों के लिए यह भी उपयुक्त होगा कि पिछले सालों में कौन से क्षेत्र में कौन सी फसल ली गई थी एवं दूधारू पशुओं के दूध उत्पादन का क्या स्तर था उसके पश्चात् प्रक्षेत्र को एक कोई मानकर, उस क्षेत्र के अनुसार फसलों को चयन किया जाए एवं उनके लिये फसल चक्र इस प्रकार बनाया जाए जिसमें अधिकतम लाभ प्राप्त किया जा सके। इन सब कार्यो के लिये एक अच्छा खास अनुभव, निर्णय लेने की ाक्ति और बाजार मूल्य की स्थिति का वर्तमतान ज्ञान होना आवश्यक है।

दूसरा प्रक्षेत्र कार्यो का पूरे वर्श भर का कलेन्डर बनाया जाना चाहिए जिसमें इस बात की महिती हो कि विभिन्न महीनों में श्रमिकों कितने बैल श्रम की आवश्यकता होगी। फसलों का क्रम इस प्रकार बनाया जाना चाहिए कि जिसमें प्रक्षेत्र पर पारिवारिक श्रमिकें को पूरे साल समान कार्य मिल सके। एक श्रमिक तालिका भी बनाई जानी चाहिए जो कि प्रबंधक को मार्ग दर्शन दे सके कि कितने श्रमिक किस कार्य के लिए आवश्यकता पड़ेगी।

स्त्रोत का नक्शा बनाना –

प्रक्षेत्र का एक नक्शा तैयार किया जाना चाहिए। जिसमें विस्तृत ले आउट दर्शाया गया हो, प्लाट के नम्बर एक आकार, सिंचाई की नालियों दशायी गई हों पानी निकास की नालियां, मेड, कार्यभवन, पशुओं के षेड कुए आदि की विस्तृत जानकारी होना चाहिए।

पशुधन कार्यक्रम की योजना – पशुधन कार्यक्रमों का विकास इस प्रकार किया जाना चाहिए जो जानवरों कीसंख्या और प्रकार प्रक्षेत्र योजना का अनुरूप हैं एवं वह प्रक्षेत्र के आकार, फसल के घनत्व व चारे व दाने की उपलब्धिता आदि के लिए भी उपयुक्त हों। परीक्षणों एवं अनुभावों के आधार पर यह तथ्य प्रकाश में आया है । कि 4–5 हैक्टर (10–12 एकड़) क्षेत्रफल के प्रक्षेत्र पर 1 जोड़ी बैल व 3–4 दुधारू पशु रखने से प्रक्षेत्र व्यापार में लाभ की वृद्धि होती है

समय पर बुवाई – फसलों की समय पर बुवाई एक महत्वपूर्ण कार्य है क्योकि प्रत्येक फसल एवं उसकी किस्म के पकने की अवधि निश्चित होती है, इसलिए समय पर बुवाई करें जिससे फसल अपनी पकने की अवधि उपयुक्त तापक्रम में पूरा कर अधिकतम उत्पादन दे सके। इसके लिए पंजाब कृ ा विश्वविद्यालय द्वारा रबी की फसल गेहू और चना की बुवाई पर अनुसंधान कर देखा गया है कि यदि गेहू की बुवाई 10 दिन देरी से करने से प्रति हैक्टेयर 6–10 क्वि. तक उपज घट जाती है। चना की 15 दिन देरी से बुवाई करने से 6 क्वीं तक उपज में कमी देखी गई है इसलिए बिना खर्च बढ़ाए सही एवं उपयुक्त समय पर बुवाई करने से 10–15 प्रतिशत तक उपज आसानी से बढ़ाई जा सकती हे।

मृदा की जांच कराके संतुलित उर्वरक उपयोग करें– देश के अधिकांश किसान उर्वराकों का उपयोग मृदा की बिना जांच किए डालते है चाहे खेत मेंवह तत्व अधिक क्यो न हो इससे अनाश्यक दिए गए तत्वों का खर्च व्यर्थ चल जाता है तथा जिस तत्व की मृदा में कमी है उसे खेत में देते नही है जिसके कारण उपज कम मिलती है साथ हीउसंतुलित उर्वरक उपयोग से खेतों कीउर्वरा ाक्ति क्षीण हो रही है संतुलित उर्वरक उपयोग कर 15–20 प्रतशत उपज बढ़ाई जा सकती है।

रासाययनिक खादों का सही समय व विधि से उपयोग– रासायनिक खाद स्फुर एवं पोटाश तत्व का आधार खाद के रूप में बोते समय बीज के नीचे डालना चाहिए परन्तु कुछ किसान डी.ए.पी. एवं एन. पी.के. और सुपर फास्फेट को खड़ी फसल में ऊपर से छिड़कते है जिससे तत्व पौधा नही ले पाता और उर्वरक व्यर्थ चला जाता है। इसलिए एन.पी.के. उर्वरकों को दुफन द्वारा नीचे और बीज ऊपर बोना चाहिए जिससे 15 – 20 प्रतिशत उर्वरक उपयोग क्षमता बढ़ जाती है तथा नत्रजनधारी उर्वरक यूरिया को खड़ी फसल में सिंचाई के समय बढ़वार के लिए 1 या 2 बार में देना लाभदायक होता है।

बीजोपचार – बीज को बुवाई से पहले कवक नाशी द्वारा अच्छी तरह उपचारित करें, इसे बाद में स्थिरीकरण प्रक्रिया द्वारा वायुमंण्डलीय नाइट्रोजन पौधे की जड़ो द्वारा प्राप्त किया जा सकेगा तथा जमीन में पड़ा अधुलशील फास्फोरस पौधे को प्राप्त हो सकेगाा। जिससे उर्वरक पर व्यय कम होगा और उपज में बढ़ोत्तरी होगी।

बीज एवं उर्वरक मिलाकर न बोयें – उचित एवं सही गहराई पर बीज बोने तथा उर्वरक को पहुचाने के लिऐ बीज एवं उर्वरक को मिलाकर नही बोना चाहिए। मिलाकर बोने से बीज और उर्वरक एक ही गहराई पर पड़ता है जिससे बीज अंकुरण क्षमता प्रभावित होती है और पौधा उर्वरकों कासही ढंग से उपयोग नही कर पाते। इसलिए सीडड्रिल द्वारा बीज एवं खाद की बुवाई करना चाहिए जिससे दोनों नियत स्थान पर पहुच सके ऐसा करने से उपज में अत्यधिक वृद्धि होती हैं

फसलों की बुवाई उचित दिशा में करें– बुवाई के समय यह ध्यान रखें की जहां संभव होसके बुवाई उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर करना चाहिए। क्योकि हवाएँ प्राय' पूर्व से पश्चिम दिशा में ज्यादातर चालती है जिससे हवा से होने वाले नुकसान से बचा जा सकता है तथा प्रकाश संश्ले ाण की क्रिया अच्छि हो जाती है उपज पर भी अनुकूल प्रभाव पढ़ता है।

डचित कीटनाशकों का उपयोग करें– कीट एवं बीमारी की सही पहचान कर कृशि वैज्ञानिक एवं अधिकारियों की सलाह के बाद कीट नाशकों का उपयोग करें अन्यथा खेती में लाभ दायक मित्र कीट भी मर जाते है जो परागण आदि में सहयोग करते है।